

॥ श्री स्वामी सामर्थ ॥

॥ पितर चालीसा ॥

श्री गणेशाय नमः।
श्री स्वामी सामर्थाय नमः ।

॥ दोहा ॥

हे पितरेश्वर आपको दे दियो आशीर्वाद।
चरणाशीश नवा दियो रखदो सिर पर हाथ।
सबसे पहले गणपत पाछे घर का देव मनावा जी।
हे पितरेश्वर दया राखियो करियो मन की चाया जी॥

॥ चौपाई ॥

पितरेश्वर करो मार्ग उजागर । चरण रज की मुक्ति सागर।
परम उपकार पितरेश्वर कीन्हा । मनुष्य योगि में जन्म दीन्हा।

मातृ-पितृ देव मन जो भावे । सोई अमित जीवन फल पावे।
जै-जै-जै पितर जी साईं । पितृ ऋण बिन मुक्ति नाहिं।

चारों ओर प्रताप तुम्हारा । संकट में तेरा ही सहारा।
नारायण आधार सृष्टि का । पितरजी अंश उसी दृष्टि का।

प्रथम पूजन प्रभु आज्ञा सुनाते । भाग्य द्वार आप ही खुलवाते।
झुंझनू ने दरबार है साजे । सब देवों संग आप विराजे।

प्रसन्न होय मनवांछित फल दीन्हा । कुपित होय बुद्धि हर लीन्हा।
पितर महिमा सबसे न्यारी । जिसका गुणगावे नर नारी।

तीन मण्ड में आप बिराजे । बसु रुद्र आदित्य में साजे।
नाथ सकल संपदा तुम्हारी । मैं सेवक समेत सुत नारी।

छप्पन भोग नहीं हैं भाते । शुद्ध जल से ही तृप्त हो जाते।
तुम्हारे भजन परम हितकारी । छोटे बड़े सभी अधिकारी।

भानु उदय संग आप पुजावै । पांच अँजुलि जल रिझावे।
ध्वज पताका मण्ड पे है साजे । अखण्ड ज्योति में आप विराजे।

सदियों पुरानी ज्योति तुम्हारी । धन्य हुई जन्म भूमि हमारी।
शहीद हमारे यहाँ पुजाते । मातृ भक्ति संदेश सुनाते।

जगत पित्तरो सिद्धान्त हमारा । धर्म जाति का नहीं है नारा।
हिन्दू , मुस्लिम , सिख , ईसाई सब पूजे पित्तर् भाई।

हिन्दू वंश वृक्ष है हमारा । जान से ज्यादा हमको प्यारा।
गंगा ये मरुप्रदेश की । पितृ तर्पण अनिवार्य परिवेश की।

बन्धु छोड़ ना इनके चरणों । इन्हीं की कृपा से मिले प्रभु शरणा।
चौदस को जागरण कर.वाते । अमावस को हम धोक लगाते।

जात जडूला सभी मनाते । नान्दीमुख श्राद्ध सभी करवाते।
धन्य जन्म भूमि का वो फूल है । जिसे पितृ मण्डल की मिली धूल है।

श्री पित्तर् जी भक्त हितकारी । सुन लीजे प्रभु अरज हमारी।
निशिदिन ध्यान धरे जो कोई । ता सम भक्त और नहीं कोई।

तुम अनाथ के नाथ सहाई । दीनन के हो तुम सदा सहाई।
चारिक वेद प्रभु के साखी । तुम भक्तन की लज्जा राखी।

नाम तुम्हारो लेत जो कोई । ता सम धन्य और नहीं कोई।
जो तुम्हारे नित पाँव पलोटत । नवों सिद्धि चरणा में लोटत।

सिद्धि तुम्हारी सब मंगलकारी । जो तुम पे जावे बलिहारी।
जो तुम्हारे चरणा चित्त लावे । ताकी मुक्ति अवसी हो जावे।

सत्य भजन तुम्हारो जो गावे । सो निश्चय चारों फल पावे।
तुमहिं देव कुलदेव हमारे । तुम्हीं गुरुदेव प्राण से प्यारे।

सत्य आस मन में जो होई । मनवांछित फल पावें सोई।
तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई । शेष सहस्र मुख सके न गाई।

मैं अतिदीन मलीन दुखारी । करहुं कौन विधि विनय तुम्हारी।
अब पितर जी दया दीन पर कीजै । अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै।

॥ दोहा ॥

पितरों को स्थान दो । तीरथ और स्वयं ग्राम।
श्रद्धा सुमन चढ़ें वहां । पूरण हो सब काम।
झुंझनू धाम विराजे हैं । पितर हमारे महान।
दर्शन से जीवन सफल हो । पूजे सकल जहान॥
जीवन सफल जो चाहिए । चले झुंझनू धाम।
पितर चरण की धूल ले । हो जीवन सफल महान॥

॥ इति पितर चालीसा ॥

॥ श्रीगुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥

॥ श्री स्वामी समर्थार्पण मस्तु॥
